स्मारिका

हिन्दी दिवस समारोह एवं कवि सम्मेलन

14 सितम्बर 2017, समय अपराह्न 3.00 बजे
स्पीकर हॉल, कॉन्स्टीट्यूशन क्लब, रफी मार्ग, नई दिल्ली

अतिथिगण

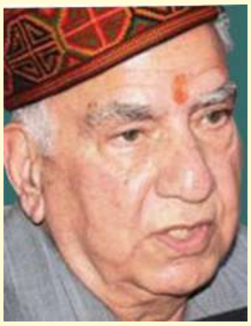

अध्यक्षता
शांता कुमार
पूर्व मुख्यमंत्री, हिमाचल प्रदेश एवं माननीय सांसद-लोकसभा (कांगड़ा)

उद्घाटनकर्ता
हंसराज गंगाराम अहीर
माननीय केन्द्रीय राज्यमंत्री
गृह मंत्रालय

मुख्य अतिथि
आर.के. सिन्हा
माननीय सांसद-राज्यसभा

विशिष्ट अतिथि
डॉ. अरूण कुमार
माननीय सांसद-जहानाबाद

मुख्य वक्ता
दया प्रकाश सिन्हा
अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त निर्देशक एवं नाटककार

विश्व हिन्दी परिषद
हिन्दी भाषा विश्व भाषा
वसुधैव कुटुम्बकम्

विश्व हिन्दी परिषद

नई दिल्ली

''मातृभाषा 'हिन्दी' के बिना हिन्दुस्तान अधूरा है...''

डॉ. बिपिन कुमार
महासचिव,
विश्व हिन्दी परिषद

राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' की पंक्तियों से अनुप्राणित होते हुए उन्होंने कहाः—

''वह प्रदीप जो दीख रहा है, झिलमिल दूर नहीं है,
थक कर बैठ गए क्यूं भाई, मंजिल दूर नहीं है।''

मातृभाषा प्रेमियों से पूर्णतः भरे सभागार को देखकर अत्यंत हर्षित होते हुए महासचिव महोदय ने कहा कि आज हम सभी हिन्दी—प्रेमी केवल 'हिन्दी दिवस' मनाने नहीं बल्कि मातृभाषा हिन्दी के सम्मान में 'राष्ट्रीय उत्सव' मनाने को एकट्ठा हुए है।

जिस तरह राष्ट्रभाषा के बिना कोई राष्ट्र पंगु हो जाता है, उसी तरह हिन्दी के बिना हिन्दुस्तान अधूरा प्रतीत होता है।

हालांकि किसी भी अन्य भाषा से या उपभाषाओं से हमें कोई विरोध नहीं। हिन्दी के सहस्त्राब्दियों वर्ष की यात्रा में लगभग सभी भाषाओं की सहभागिता रही। विभिन्न भारतीय भाषाओं का भिन्न—भिन्न रूप मिलकर 'हिन्दी के स्वरूप में हमारी राष्ट्रीय एकता को प्रदर्शित करता है जो हमें आजादी के बाद से ही 'राष्ट्रभाषा' प्राप्ति हेतु अद्यतन उद्वेलित करता रहा है।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र भाई मोदी जी द्वारा वैश्विक मंचों पर 'हिन्दी' में संबोधित करना, हम मातृभाषा प्रेमियों के लिए अत्यंत गर्व की बात है। 'राजभाषा' हिन्दी को 'राष्ट्रभाषा' में परिणत करने हेतु विश्व हिन्दी परिषद द्वारा किए जा रहे सतत प्रयासों को आगंतुक गणमान्य एवं विशिष्ट अतिथियों, वक्ताओं, साहित्यकारों, कविगण, छायाकारों, पत्रकारगण, दिल्ली विश्वविद्यालय के शताधिक छात्र—छात्राएं एवं बहुसंख्य मातृभाषा प्रेमियों का इस राष्ट्रीय पर्व में सहभागिता सुनिश्चित करने से बहुत बल मिला है।

मातृभाषा के सर्वोच्च सम्मान 'राष्ट्रभाषा' हेतु विश्व हिन्दी परिषद के इस संघर्ष में सरकार के साथ—साथ आप हिन्दी प्रेमियों का सहयोग भी अपेक्षित है। आप लोगों का स्नेह, प्यार और साथ यूँ ही मिलता रहा तो हमें उम्मीद है कि 'हिन्दी' को जल्द ही 'राष्ट्रभाषा' का गौरवपूर्ण दर्जा मिल जाएगा।

जय हिन्दी—जय हिन्दुस्तान, हिन्दी बढ़े... हिन्दुस्तान बढ़े...

“हिन्दी, राष्ट्रीय अस्मिता का प्रश्न है...”

शांता कुमार

पूर्व मुख्यमंत्री, हिमाचल प्रदेश एवं
माननीय सांसद-लोकसभा (कांगड़ा)

प्रश्न केवल भाषा का नहीं है, प्रश्न हमारे स्वाभिमान का है, राष्ट्रीय अस्मिता का है। शिकागो में पहली बार राष्ट्रीय स्वाभिमान जगाने का काम स्वामी विवेकानंद जी ने किया था। इस संदर्भ में राजगोपालाचारी जी ने कहा था– यदि स्वामी जी नहीं आये होते तो स्वतंत्रता आंदोलन की तैयारी में कुछ और विलंब हो जाता।

अंग्रेजी गुलामी से ग्रसित एवं मातृभाषा के प्रति हीनता का भाव हमारे राष्ट्रीय भावना की भूमि को बंजर बना दिया है। अंग्रेजी बोलने का स्वाभिमान अब तक खत्म नहीं हुआ। ''हिन्दी'' बोलने की हीन भावना से अब तक मुक्त नहीं हुए। राष्ट्रीय एकता पर यह कुठाराघात है। अब समय आ गया है कि सरकार के साथ–साथ संपूर्ण समाज भी 'मातृभाषा हिन्दी' की उन्नति के लिए साथ–साथ पहल करें। हम अपनी–अपनी भागीदारी से हिंदी को वैश्विक नभ पर विस्तृत एवं व्यापक रूप में प्रतिष्ठित करें।

अपने मुख्यमंत्रित्व काल के शुरूआती दिनों मे ही मैंने हिंदी को राज्य (हिमांचल) में लागू करने का आदेश जारी किया, जिस पर मेरे निजी सचिव, जो कि अंरूणाचल प्रदेश से थे एवं पूर्व सैनिक भी थे, ने थोड़ी आपत्ति जताई। दूसरे दिन ही वे छुट्टी पर चले गए। तीन दिनों बाद लौटे। हमने पूछा सब ख़ैरियत तो है, स्वास्थ्य ठीक है न आपका?

उन्होंने जबाव में कहा–सब ठीक है। हिंदी लागू हो सकता है, हिंदी में काम कर सकता हूं। पिछले तीन दिनों से मैं हिंदी सीख रहा था। अब थोड़ा–थोड़ा बोल भी सकता हूं, महोदय। यह दृष्टांत यह दर्शाता है कि आपकी भावना अगर राष्ट्रप्रेम और मातृभाषा से ओतप्रोत हों तो सबकुछ सहज ही हो जाता है, मातृभाषा सीखना–बोलना भी।

हां, हमें यह भी ध्यान रखना होगा कि मातृभाषा के उत्थान और संवर्धन की प्रक्रिया में क्षेत्रीय भाषाओं का नुकसान न हो। इन भाषाओं के सामूहिक मेल से ही मातृभाषा 'हिंदी' हिन्दुस्तान की 'बिंदी' है। अतः आज हम संकल्प ले कि अपने दैनिक जीवन में हम सभी मातृभाषा हिंदी का प्रयोग करेंगे एवं औरों को भी इसे लिए प्रेरित करेंगे।

विश्व हिंदी परिषद के महासचिव डॉ.बिपिन कुमार जी द्वारा मातृभाषा के संवर्धन हेतु इस भागीरथी प्रयास के लिए कोटी–कोटी बधाई एवं धन्यवाद...

हिन्दी बढ़े.... हिन्दुस्तान बढ़े....

“‘हिन्दी भाषा एक महान भाषा है, यह पूरे हिन्दुस्तान की भाषा है।’’

हंसराज गंगाराम अहीर
माननीय केन्द्रीय राज्यमंत्री
गृह मंत्रालय

मातृभाषा प्रेमियों के लिए यह दुर्भाग्य की बात है कि अपने राष्ट्र की भाषा को प्रतिस्थापित करने हेतु 'हिन्दी–दिवस' जैसे कार्यक्रम आयोजित करने की जरूरत पड़ती है और सौभाग्य की बात यह है कि आजादी के बाद तत्कालीन सरकार के अधिकांशतः नेता गैर हिन्दी प्रदेशों से थे जिन्होंने राष्ट्रभाषा के रूप में 'हिन्दी' की पुरजोर वकालत की, अंततः राजभाषा के रूप में हिन्दी को संवैधानिक रूप से अंगीकृत किया गया।

राष्ट्रभाषा की इस कड़ी में महाराष्ट्र के लोकप्रिय नेता बाल गंगाधर तिलक बंगाल से नेताजी सुभाष चन्द्र बोस एवं रवीन्द्रनाथ ठाकुर, गुजरात से महात्मा गांधी, दक्षिण भारत से श्री गोपाल स्वामी समेत अनेक नेताओं ने अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया।

कालांतर में भारत रत्न एवं पूर्व प्रधानमंत्री माननीय श्री अटल बिहारी बाजपेयी जी, माननीय उपप्रधानमंत्री श्री लालकृष्ण आडवाणी जी एवं वर्तमान में माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र भाई मोदी जी ने अपने संसदीय अभिभाषण में मातृभाषा 'हिन्दी' का प्रयोग करते रहे हैं और करते हैं। हम मातृभाषा प्रेमियों के लिए अत्यंत गर्व की बात है यह। हम लोगों को इसके उत्थान में अपना योगदान देना चाहिए।

विगत कुछ दशकों से 'हिन्दी' के प्रति उदासीनता और उसका विरोध पहले से बहुत घटा है। अंग्रेजी के प्रबल पक्षधर राज्यों का भी अब हिन्दी की ओर स्वतः झुकाव देखने को मिल रहा है। दक्षिण भी इससे विमुख नहीं है। हिन्दी के प्रति बदलते परिदृश्य में प्रतिपक्ष के प्रमुख नेता माननीय 'शशि थरूर' जी का अवश्य जिक्र करना चाहूंगा जो संसद में अपनी बात रखने के दौरान अंग्रेजी के बजाय आजकल हिन्दी में बोलना ज्यादा पसंद करते हैं और राज्यों की बात करें तो केरल, तमिलनाडु और आन्ध्र प्रदेश जैसे राज्य भी धीरे–धीरे हिन्दी को स्वीकार कर रहे हैं, मातृभाषा के सवंर्धन की दिशा में यह एक अच्छी पहल है।

आजादी से पहले और आजादी के बाद 'हिन्दी' ने पूरे देश को एक सूत्र में पिरोने का कार्य किया है और वर्तमान में राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार भी 'हिन्दी' के उचित मान–सम्मान हेतु कृत–संकल्पित है।

विश्व हिन्दी परिषद के महासचिव डॉ. बिपिन कुमार जी को मैं शुभकामना देता हूं कि वे आगे भी ऐसे आयोजन कर मातृभाषा का संवर्धन करते रहें।

‘‘आज ‘हिंदी’ विश्व की दूसरी सबसे बड़ी भाषा है।’’

आर.के. सिन्हा
मानीय सांसद-राज्यसभा

हिंदी का विरोध करने वाले व्यक्तियों, संस्थानों एवं राजनैतिक दलों को ’राष्ट्रविरोधी हरकत का दोषी’ कहने में मुझे तनिक भी संशय नहीं। अंग्रेज चले गए पर अंग्रेजियत छोड़ गए। सच कहूं तो मुझे बहुत तरस आती है ऐसे अंग्रेजीदां लोगों पर, इन्हें शुद्ध–शुद्ध अंग्रेजी बोलना–लिखना नहीं आता फिर भी अंग्रेजियत का बोझ ढ़ोते रहते हैं कथित रूप से संभ्रांत दिखने के लिए।

मातृभाषा तो वह भाषा है जो मां सिखाती है। अपनी मातृभाषा का हम सम्मान न करें, इसका मतलब हम अपनी मां के दूध का अपमान कर रहे हैं।’ एक चर्चित प्रसंग को साझा करते हुए उन्होंने निष्कर्षतः कहा– आज भी हमें जब दर्द होता है तो अपनी मातृभाषा में ही हम उस दर्द को व्यक्त करते हैं। मातृभाषा हमारी आत्मीय भावना को प्रदर्शित करता है। हिंदी ह्रदय से निकली भाषा है जो हमें अपनत्व का बोध कराती है।

विश्व के लगभग सभी देशों की मैंने यात्रा की है पर ’हिंदी’ का विरोध कहीं नहीं देखा मैंनें। चाहे वह देश इंग्लैण्ड, फ्रांस, जर्मनी, अमेरिका या रूस ही क्यों न हो। हिंदी भाषा सीखना आज वैश्विक मजबूरी बन गई है अन्य देशों के लिए। क्योंकि भारत आज सौ करोड़ व्यक्तियों का वृहद बाजार है। सबको यहां अपना–अपना व्यापार करना है, अतएव, हिंदी अपनाना मजबूरी है। हिंदी के बारे में भ्रांति न पालें और मातृभाषा को सहर्ष ही अपनाएं।

आज मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि उत्तर भारतीयों की अपेक्षा दक्षिण भारतीयों को ज्यादा शुद्ध–शुद्ध पढ़ना व बोलना आता है। क्योंकि हिंदी सीखकर विद्यालय में जाने पर व्याकरण सीखते हैं, लेकिन दक्षिण में लोग पहले व्याकरण सीखते हैं तदंतर हिंदी भाषा। मातृभाषा प्रेमियों से मेरा विनम्र अनुरोध है कि वे अपने भावी पीढ़ी को ’हिंदी’ जरूर पढ़ाएं और अपने बच्चों से हिंदी में ही बात करे। ’हिन्दी’ का संवर्धन खुद–ब–खुद हो जाएगा।

विश्व हिन्दी परिषद के महासचिव डॉ. बिपिन जी एवं उनके सहयोगियों को बहुत–बहुत धन्यवाद...

‘‘‘हिन्दी’ हिन्दुस्तान का पवित्र संकल्प है।’’

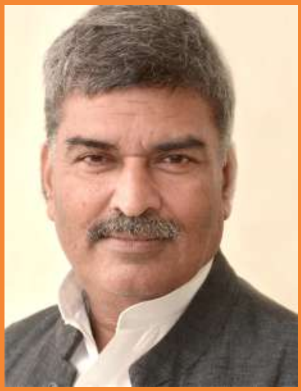

डॉ. अरुण कुमार
मानननीय सांसद–जहानाबाद

राष्ट्रकवि रामधारी सिंह ‘दिनकर’ की इन पंक्तियों को कोट करते हुए विशिष्ट अतिथि के रूप में उन्होंने अपने उद्‌बोधन की शुरूआत कीः—

‘‘गवाक्ष तब भी था, जब वह खोला न गया,
सच तब भी था, जब वह बोला न गया।’’

अब समय आ गया है कि हम सच बोलें—हिन्दी, हिन्दुस्तान का पवित्र संकल्प है। मातृभाषा ‘हिन्दी’ को ‘राष्ट्रभाषा’ बनाने की दिशा में यह संकल्प हमें बारम्बार दुहराते रहना चाहिए और तब तक कोशिशें करती रहनी चाहिए जब तक यह संकल्प पूर्णरूपेण फलीभूत न हो जाए। अतीत में भी इसके लिए समुचित प्रयास होते रहे हैं और वर्तमान में भी निरन्तर यह जारी है।

आजादी के बाद घोषित राजभाषा ‘हिन्दी’ को वैश्विक स्तर पर स्थापित करने का श्रेय भारत रत्न, पूर्व प्रधानमंत्री, माननीय अटल बिहारी वाजपेयी जी को जाता है, जिन्होंने विदेश मंत्री के रूप में यूनाईटेड नेशन्स (UN) की सभा में ‘हिन्दी’ में दिए अपने ओजस्वी भाषण से उन्होंने संपूर्ण विश्व में जो गहरी छाप छोड़ी, वर्तमान प्रधानमंत्री, माननीय नरेन्द्र भाई मोदी द्वारा विदेशों में दिए जा रहे भाषण में वह अनुगूँज स्पष्टतः सुनाई पड़ती है। अतः हम निर्विवाद रूप से यह कह सकते हैं कि मातृभाषा के संवर्धन में उपरोक्त माननीय नेताद्वय का विशिष्ट योगदान रहा है।

भाषाई विवाद के कारण को स्पष्ट करते हुए उन्होंने कहा—तमिल, कन्नड़, मलयालम आदि काफी समृद्ध भाषा है। इसका विरोध करने का तो सवाल ही पैदा नहीं होता है किन्तु कुछ राजनैतिक दलों द्वारा यह भ्रम और विवाद अकारण पैदा किया गया ताकि उसका निजी लाभ उठा सकें। तत्क्षण ऐसी भाषाई दुर्घटनाएं हुई हैं जिसके कारण हमारी राष्ट्रीय भावना के भाव में अभाव हुआ, फलस्वरूप ये विसंगतियां हुई।

राष्ट्रीय ध्वज, राष्ट्रीय गान और राष्ट्रीय भाषा के सम्मान हेतु प्रतिबद्ध माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी का मैं आभार प्रकट करता हूं। 3 वर्षों के उनके सफल कार्यकाल में मातृभाषा की जो गरिमा बढ़ी है, काबिल—ए—तारीफ है।

विश्व हिन्दी परिषद के महासचिव डॉ. बिपिन कुमार जी एवं उनके समस्त साथियों को मातृभाषा संवर्धन के इस जीवंत उत्सव के सफल आयोजन हेतु बहुत—बहुत बधाई।

आगे भी ऐसे आयोजन करते रहने के लिए हार्दिक शुभकामनाएं....

हिन्दी बढ़े... हिन्दुस्तान बढ़े....

‘‘भारत के सभी भाषाओं की लिपि ‘देवनागरी’ और राष्ट्रभाषा ‘हिन्दी’ हो।’’

दया प्रकाश सिन्हा
अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त निर्देशक
एवं नाटककार

मातृभाषा ‘हिन्दी’ को न सिर्फ उत्तर भारतीयों ने अपितु दक्षिण, पूर्व और पश्चिम के अधिसंख्य लोगों ने अंगीकार किया है। हिन्दी भारत के जन–जन की भाषा है, हमारे अंतःकरण की भाषा है। एक प्रशासक के रूप में मैंने अपने संपूर्ण सेवाकाल में हिन्दी के संवर्धन हेतु यथासंभव कार्य संपादित किया और अन्य सहकर्मियों को भी प्रेरित किया जिससे मुझे आज भी अत्यंत गर्व की अनुभूति होती है।

अधिकारपूर्वक यह कह सकता हूं कि अपने सेवा समय के दौरान मातृभाषा के उत्थान की दिशा में अपना एवं अपने साथियों से भी यथेष्ट योगदान दिया तथा दिलाया।

राष्ट्रहित में इस पुनीत कार्य हेतु सेवा समाप्ति के बाद भी मैं अब तक प्रयत्नशील हूं। आप भी अपने–अपने स्तर से मातृभाषा के सम्मान के लिए प्रयत्न करते रहें तो हमें ‘राष्ट्रभाषा’ रूपी मंजिल अतिशीघ्र मिल जाएगी। अब बस जरूरत है इस अभियान (राष्ट्रीय) में स्वतः स्फूर्त होकर योगदान देने की।

हम हिन्दी प्रेमियों के लिए अत्यंत हर्ष की बात है कि माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र भाई मोदी जी ने देश और विदेशों में भी ‘हिन्दी’ में अभिभाषण देकर मातृभाषा ‘हिन्दी’ को संजीवनी प्रदान की है। जिसके लिए विश्व हिन्दी परिषद की ओर से मैं उनका हार्दिक आभार प्रकट करता हूं।

“मातृभाषा ‘हिन्दी’ हृदय की भाषा है।”

ए.के. मित्तल
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक
(एनबीसीसी)

मातृभाषा की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि जब कार्यालय में हम सहकर्मी बंधु आपस में बातचीत करते हैं तो प्रायः अंग्रेजी में ही बातें करते हैं, लेकिन उस वार्तालाप में वो आत्मीयता नहीं झलकती जो अपनी मातृभाषा में बात करने में आनंद मिलता है।

कामकाज के जरूरत की भाषा में शून्य सा प्रतीत होता है, परंतु ज्यों ही हम अपनी मातृभाषा में बात करते हैं, तब ऐसा लगता है मानों हृदय से हृदय मिल रहे हों। हम गर्व से कह सकते हैं, ‘हिन्दी’ हृदय की भाषा है, जन–जन की भाषा है। राजभाषा विभाग में अयोजित त्रैमासिक कार्यालयी प्रतियोगिता पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि यद्यपि इनमें से कुछेक सहकर्मियों को विविध भाषाई क्षेत्र से होने के कारण थोड़ी असुविधा होती है किन्तु मातृभाषा के उत्थान में अपना योगदान देने की अभिलाषा के आगे यह समस्या गौण हो जाती है। कुछ दिनों के प्रयास के बाद सहज ही वे मातृभाषा में बात करने लगते हैं एवं कार्यालयी कामकाज भी हिन्दी में करने लगते हैं।

सरकारी कार्यालयों में ‘हिन्दी’ में अधिकाधिक कार्य संपादित करने हेतु वर्तमान केन्द्र सरकार के राजभाषा मंत्रालय और माननीय प्रधानमंत्री महोदय को धन्यवाद देता हूं।

जय हिन्दी.... जय हिन्दुस्तान, हिन्दी बढ़े.... हिन्दुस्तान बढ़े....

विश्व हिन्दी दिवस 2017 की झलकियाँ

विश्व हिन्दी दिवस 2017 की झलकियाँ

हिन्दी दिवस 2017 की झलकियाँ

हिन्दी दिवस 2017 की झलकियाँ